

## **भूमि उपयोग प्रतिरूप की समीक्षा : चतरा जिला (झारखण्ड) के संदर्भ में एक भौगोलिक अध्ययन**

**डॉ० मनीष कुमार**

पी.जी.टी., रा.कृ.+2 उच्च विद्यालय, तरहसी,  
पलामू, 822118

Email – manishkumar8879@gmail.com

### **शोध सारांश :-**

भूमि उपयोग सर्वेक्षण भौगोलिक अध्ययन का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण भूमि उपयोग संबंधी अध्ययन की उपादेयता और अधिक बढ़ जाती है। वनों को तेजी से काटा जा रहा है तथा प्राप्त भूमि का उपयोग अन्य कार्यों, आवास, उद्योग, कृषि, आदि में हो रहा है। अर्थात् प्राकृतिक भू-दृश्य, सांस्कृतिक भू-दृश्य में परिवर्तित हो रहे हैं।

अध्ययन क्षेत्र चतरा जिला में भूमि उपयोग प्रतिरूप में परिवर्तन देखने को मिलता है। जहाँ 2004-05 ई० में वनों का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का लगभग 61 प्रतिशत था वहीं 2011 ई० में यह लगभग 48 प्रतिशत हो गया है। इसी प्रकार गैर कृषि कार्य में लगाई भूमि, कृषि योग्य बंजर भूमि एवं शुद्ध बोये गए क्षेत्रों में वृद्धि हुई है, वहीं परती भूमि के अन्तर्गत चालू परती एवं अन्य परती भूमि में कमी हुई है। जिला के क्षेत्रिय भूमि प्रतिरूपों में भी विषमता दृष्टिगोचर होता है। बढ़ती जनसंख्या के कारण भूमि पर उत्पन्न जनदबाव के कारण वनों में ह्रास प्रत्येक प्रखण्डों में दिखाई पड़ते हैं। इसका प्रमाण लावालौंग प्रखण्ड है जहाँ 2004-05 में लगभग 98 प्रतिशत भाग वनक्षेत्र घोषित था लेकिन 2011 ई में घटकर 16.32 प्रतिशत क्षेत्र रह गया। इसी प्रकार कृषि योग्य बंजर भूमि की अभूतपूर्व बढ़ोतरी सभी प्रखण्डों में देखने का मिलता है।

### **मुख्य शब्द :-**

भूमि उपयोग प्रतिरूप, गैर कृषि कार्य में लगाई भूमि, कृषि योग्य बंजर भूमि, चारागाह, चालू परती, अन्य परती

### **परिचय :-**

भूमि एक महत्वपूर्ण संसाधन है। यह किसी देश या प्रदेश की अर्थव्यवस्था में मुख्य भूमिका अदा करती है। भारत तथा अध्ययन क्षेत्र की यह एक प्राकृतिक संपत्ति है। भूमि उपयोग प्रतिरूप के अध्ययन से भूमि का कौन सा और कितना भाग किस प्रकार के कार्यों में उपयोग होता है यह

पता चलता है।<sup>1</sup> मानव के अध्ययन के संबंध में यह समीचीन जान पड़ता है, क्योंकि मानव जहाँ रहता है वहाँ के भूमि का उपयोग विविध तरीके से करता है। जैसे-जैसे जनसंख्या में वृद्धि होती है, भूमि उपयोग परिवर्तित होता रहता है। प्रारम्भ में भूमि क्षेत्र मात्र प्राकृतिक होता है। कलांतर में मानव अपनी आवश्यकतानुसार उसका उपयोग करता है। धीरे-धीरे विभिन्न सांस्कृतिक कारकों से प्रभावित होकर उसका प्राकृतिक स्वरूप लुप्त हो जाता है। 'बेनेजटी' के अनुसार भूमि उपयोग प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक उपादानों के संयोग का प्रतिफल होता है जबकि किसी क्षेत्र विशेष में भूमि उपयोग प्राकृतिक प्रदत्त विशेषताओं के अनुरूप रहता है।<sup>2</sup> मानवीय क्रिया कलाप प्राकृतिक कारकों द्वारा निर्धारित होते हैं। कालक्रम में भूमि उपयोग निर्धारण में मानवीय भूमिका निर्णायक होती है। 'बुड' महोदय के अनुसार भूमि प्रयोग एक प्राकृतिक भू-दृश्य या वनस्पति आच्छादित भू-दृश्य के सन्दर्भ में ही नहीं बल्कि मानवीय क्रियाओं से उत्पन्न उपयोगी सुधारों के रूप में भी प्रयुक्त होना चाहिए।<sup>3</sup> इस प्रकार भूमि उपयोग एक क्रियाशील अवधारणा है जो आर्थिक समस्याओं के अनुरूप उत्पन्न होती है।

'भूमि उपयोग' शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम 'सावर'<sup>4</sup> 1910 तथा 'जोन्स एवं फ्रिन्च'<sup>5</sup> 1925 द्वारा किया गया था। परन्तु भूगोल में इसके अध्ययन के वास्तविक एवं व्यावहारिक महत्व 'डडले स्टैम्प'<sup>6</sup> के ग्रेट ब्रिटेन में भूमि उपयोग सर्वेक्षण से प्राप्त हुआ। भारतीय सन्दर्भ में 'शफी'<sup>7</sup> 'भाटिया'<sup>8</sup> के कार्य मौलिक माने जाते हैं। इसके अतिरिक्त 'राव' एवं एस.एल. प्रकाश<sup>9</sup> 'अली'<sup>10</sup> 'सिन्हा'<sup>11</sup> आदि के भूमि उपयोग के विभिन्न पक्षों से संबंधित अध्ययन भी उद्धरणीय है।

मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु भूमि का उपयोग विविध रूपों में करता चला जा रहा है। भूमि संबंधी इस प्रकार के उपयोगों के फलस्वरूप अनेक समस्याओं का जन्म होता है। जनसंख्या वृद्धि के कारण मृदा की उत्पादकता में ह्रास की समस्या और गंभीर होती जा रही है। अतः मानव कल्याण हेतु भूमि उपयोग परिवर्तन का अध्ययन एवं मूल्यांकन करना आवश्यक हो जाता है।

#### अध्ययन का औचित्य एवं महत्व :-

भारत जैसे कृषि प्रधान देश में कृषि का विशेष महत्व है। यह मनुष्य का अति प्राचीन व्यवसाय है। कृषि का उपयोग मानव के लिए खाद्य, वस्त्र तथा गृह निर्माण में ही नहीं अपितु आवासीय-विकास, उद्योग और व्यापार में भी किया जाता है। परन्तु संपूर्ण धरातल कृषि योग्य नहीं है और न ही किया जा सकता है। इसके लिए उपजाऊ भूमि का ही प्रयोग किया जा सकता है। परन्तु कृषि अयोग्य भूमि का एक भाग मानवीय प्रयासों द्वारा कृषि योग्य बनाया जा

सकता है। भूमि का समुचित उपयोग करने हेतु भूमि संसाधन के यथासंभव अधिकतम उपयोग तथा नियोजन द्वारा ही मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति संभव है।<sup>12</sup>

तीव्र गति से बढ़ती जनसंख्या, जीवन स्तर में उत्थान, पौधों और जैविक पदार्थों का औद्योगिक उपयोग में वृद्धि, खाद्यान्न तथा अन्य कृषि उपजों के बीच भूमि उपयोग में होने वाली प्रतिस्पर्धा, नागरिक एवं औद्योगिक विकास में प्रगति, यातायात मार्गों का विस्तार आदि भूमि उपयोग में परिवर्तन कर रहे हैं। इस प्रकार क्षेत्रीय स्तर पर भूमि उपयोग का अध्ययन महत्वपूर्ण हो जाता है। भूमि उपयोग का जो वर्तमान स्वरूप है उसे किस प्रकार अच्छा बनाया जा सकता है, इसे किस प्रकार संतुलित रूप से विकसित किया जा सकता है और कैसे बहुआयामी उपयोग किया जा सकता है आदि अध्ययन का औचित्य साबित करते हैं।

### अध्ययन का उद्देश्य :-

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य चतरा जिला में भूमि उपयोग से संबंधित मुख्य कारकों का अध्ययन करना है। अध्ययन क्षेत्र में प्रखंडानुसार विभिन्न प्रकार की भूमि का किस प्रकार और कितना उपयोग हो रहा है यह जानने का प्रयास किया गया है।

### विधि तंत्र :-

प्रस्तुत शोध-अध्ययन हेतु भूमि उपयोग के विभिन्न स्रोतों से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। इस कार्य हेतु 2004-05 एवं 2011 ई० के भूमि उपयोग के आंकड़ों को आधार माना गया है। प्रतिशत में परिवर्तन के लिए निम्न सूत्र उपयोग किया गया है

$$\text{कुल भौगोलिक क्षेत्र का प्रतिशत} = \frac{\text{भूमि उपयोग मद का क्षेत्रफल}}{\text{कुल भौगोलिक क्षेत्रफल}} \times 100$$

अध्ययन की उपादेयता को देखते हुए चतरा जिला के 2011 ई० के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल के आंकड़ों को भी प्रखंडानुसार सारणीबद्ध किया गया है।

### अध्ययन क्षेत्र :-

चतरा झारखंड के उत्तरी छोटानागपुर के उत्तरी भाग में कृषि प्रधान जिला है। चतरा को 1780 ई० से 1833 ई० तक छोटानागपुर प्रमंडल का प्रशासनिक मुख्यालय रहने का गौरव प्राप्त है।<sup>13</sup> चतरा को चतुरों (जाति) की बस्ती के नाम से जाना जाता था।<sup>14</sup> इसे झारखंड का प्रवेश द्वार भी कहा जाता है। चतरा जिला 30 मई 1991 ई० को हजारीबाग जिला से अलग होकर अस्तित्व में आया। इस जिला का अक्षांशीय विस्तार 23°38'31" उत्तरी अक्षांश से 24°30' उत्तरी अक्षांश तथा देशांतरीय विस्तार 84°29'15" पूर्वी देशांतर से 85°19'1" पूर्वी देशांतर के मध्य है।

जिला के उत्तरी भाग में बिहार राज्य के गया जिला का मैदानी भाग, पूर्व में हजारीबाग एवं कोडरमा जिला, पश्चिम में पलामू तथा दक्षिण में लातेहार एवं रांची जिला के कुछ भाग सीमा बनाते हैं। यहां कोयला, अभ्रक तथा चुना पत्थर जैसे खनिज पदार्थों का सीमित मात्रा में भंडार मौजूद है। प्रतापपुर के पास कुन्दा का किला, ईटखोरी में माँ भद्रकाली मंदिर तथा हंटरगंज के कोल्हुआ (कौलेश्वरी) पहाड़ महत्वपूर्ण ऐतिहासिक एवं धार्मिक महत्व के दर्शनीय स्थल हैं।

चतरा जिला हजारीबाग पठार के पश्चिम का निम्न पठारी भाग है जिसे 'चतरा का पठार' के नाम से जाना जाता है। इस जिला के भूगर्भिक संरचना बाहरी छोटानागपुर पठार की तरह ही है। इस जिला में मुख्य रूप से तीन प्रकार की शैलें पाई जाती है— प्राचीन युग के आर्कियन निर्माण की शैलें, गोंडवाना युगीन निर्माण की शैलें तथा उत्तरी नवीन (जलोढ़ प्रकार का) निर्माण की शैलें। चतरा जिला की औसत ऊंचाई 300 से 500 मीटर तक पाई जाती है।<sup>15</sup> कहीं-कहीं कुछ पहाड़ियों की ऊंचाई 600 मीटर से भी अधिक है। ऊँची नीची उच्चावच के कारण पहाड़ी क्षेत्रों में कई प्राकृतिक झरने पाए जाते हैं, जैसे डुमेर-सुमेर, गोवा, केरीडीह, मालदा, तमासीन और खाया बनारू। भू-आकृतिक दृष्टिकोण से चतरा जिला को तीन भागों में बांटा जाता है— उत्तरी मैदानी विशेषता वाले कम ऊँचाई का भाग, मध्यवर्ती मध्यम ऊंचाई का पठारी भाग तथा दक्षिणी अधिक ऊँचाई का पठारी भाग।

अध्ययन क्षेत्र में प्रवाहित होने वाली अधिकांश नदियाँ बरसाती हैं जो गर्मी के दिनों में प्रायः सूख जाया करती है। छोटी-छोटी नदियों को यहां 'ढोड़ा' कहा जाता है।<sup>16</sup> फल्गु, हेरू, मोरहर, बराकर, मोहनी, दामोदर, अमानत आदि प्रमुख नदियाँ हैं। यह क्षेत्र उष्णकटिबंधीय मानसूनी क्षेत्र में स्थित है। यहाँ स्पष्ट रूप से चार ऋतुएँ (शीत, बसंत, ग्रीष्म तथा वर्षा ऋतु) पायी जाती है। आमतौर पर दिसंबर सबसे ठंडा महीना रहता है जबकि सबसे गर्म महीना मई है। औसत तापमान 22° सें.ग्रे. से 24° सें.ग्रे. तक तथा औसत वर्षा 120 सें.मी. से 140 सें.मी. तक होती है।

चतरा जिला के उत्तरी भाग में जलोढ़ प्रकार की मिट्टी पाई जाती है जबकि अधिकांश भागों पर लाल मिट्टी की प्रधानता है। अध्ययन क्षेत्र वन संपदा की दृष्टि से धनी है। यहाँ लगभग आधी भूमि पर वनों के रूप में प्राकृतिक वनस्पति पाया जाता है। यह कृषि प्रधान जिला है धान (चावल) यहां का मुख्य खाद्यान्न फसल है जबकि दूसरा एवं तीसरा खाद्यान्न फसल क्रमशः मक्का एवं गेहूँ है। यही कारण है कि प्रो० इनायत अहमद ने इसे धान-मक्का-मडुआ क्षेत्र में रखा है।<sup>17</sup> जबकि राव एवं सिंह ने इसे धान-मक्का-गेहूँ क्षेत्र में रखा है जिला में पाए जाने वाले खनिजों में कोयला एवं चुना पत्थर है।<sup>19</sup> उद्योग-धंधे की दृष्टि से यह जिला पिछड़ा हुआ है। यहाँ एक दो अभ्रक उत्खनन एवं शोधन संबंधी उद्योग टंडवा एवं इटखोरी प्रखंडों में मिलता है।

**अध्ययन की व्याख्या :-**

अध्ययन क्षेत्र चतरा जिला के अधिकांश भूभाग पर वन (46.57 प्रतिशत) स्थित है। जनसंख्या के तीव्र गति से वृद्धि के कारण यहां अनुकूल कृषि योग्य भूमि पर दबाव लगातार बढ़ता जा रहा है। यहाँ की अधिकांश जनसंख्या कृषि कार्य में संलग्न है। यही कारण है कि शुद्ध बोया गया क्षेत्र 12 प्रतिशत से बढ़कर लगभग 29 प्रतिशत हो गया है। चतरा जिला के भूमि उपयोग प्रतिरूप के अध्ययन हेतु सरकारी भूमि उपयोग विवरणिका के आधार पर 9 वर्गों में बांटा गया है—

- 1) वन
- 2) गैर कृषि कार्य में लगाई भूमि
- 3) ऊसर एवं गैर कृषि योग्य भूमि
- 4) कृषि योग्य बंजर भूमि
- 5) चारागाह
- 6) विविध प्रकार के पेड़ पौधों (वृक्षों) के अंतर्गत आने वाली भूमि
- 7) चालू परती
- 8) अन्य परती
- 9) शुद्ध बोया गया क्षेत्र

**1) वन क्षेत्र**

अध्ययन क्षेत्र में वनों की प्रचुरता है तथा अधिकांश भूमि को प्राकृतिक रूप से उगे वनों ने ढक रखा है। 2004–05 ई० एवं 2011 ई० के आंकड़ों (तालिका सं-04) की तुलना करें तो 60.83 प्रतिशत की तुलना में 46.57 प्रतिशत वन क्षेत्र पाते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र चतरा जिला में वनों के क्षेत्रफल में निरंतर ह्रास हो रहा है। हालांकि वन जिला के अर्थव्यवस्था में मुख्य भूमिका अदा करता है। वनों का सर्वाधिक प्रतिशत कुन्दा प्रखण्ड में 75.09 प्रतिशत है (2011 ई०)। यहाँ 2004 ई० में वनों का प्रतिशत 78.08 था। इसी अवधि में लावालौंग में वन 97.98 प्रतिशत था जो घटकर मात्र 16.32 प्रतिशत (2011 ई०) हो गया। ध्यातव्य है कि चतरा जिला का एकमात्र राजकीय वन्य प्राणी अभ्यारण्य 'लावालौंग वन्य प्राणी अभ्यारण्य' यहीं है। 2004–05 ई० के आंकड़ों (तालिका सं. 01) एवं 2011 (तालिका सं -03 ) को देखने से यह सपष्ट होता है कि चतरा प्रखण्ड में वन क्षेत्र में वृद्धि हुई है जबकि लगभग सभी प्रखण्डों में वनों को ह्रास हुआ है। लावालौंग प्रखण्ड के बाद सिमरिया ऐसा दूसरा प्रखण्ड है जहाँ 2004–05 ई० (65.22 प्रतिशत) की तुलना में 2011 ई० (26.82 प्रतिशत) में वनों में सर्वाधिक ह्रास दर्ज किया गया है।

क्र.	प्रखण्ड का नाम	वन क्षेत्र	गैर कृषि कार्य में लगाई भूमि	ऊसर और गैर कृषि योग्य भूमि	कृषि योग्य बंजर भूमि	चासगाह	विविध प्रकार के वृक्ष	परती भूमि		शुद्ध बोया गया क्षेत्र
								अन्य परती	चालु परती	
1	हंटरगंज	54.49	1.98	2.06	1.76	0	0	9.76	16.42	13.58
2	प्रतापपुर	65.2	1.76	2.85	2.38	0.14	0.0042	7.4	8.21	12.06
3	कुन्दा	78.45	0.78	0.82	1.53	1.02	0.02	5.85	8.46	3.07
4	लावालौंग	97.98	0.18	0.13	0.11	0	0	0.49	0.39	0.72
5	चतरा	55.66	2.56	4.58	1.15	0.51	1.32	10.79	8.73	14.69
6	इटखोरी	37.98	5.49	2	0.43	1.42	0.46	13.4	12.38	26.44
7	गिद्धौर	67.8	2.73	0	1.49	0.13	0	4.83	13.12	9.9
8	पथलगाड़ा	67.18	1.03	1.31	0.72	0	0	3.16	10.08	16.52
9	सिमरिया	65.22	1.76	0.68	0.08	0.06	0	9.51	11.23	11.46
10	टण्डवा	42.72	10.1	1.17	1.94	1.65	0.64	17.9	12.21	11.67
	चतरा जिला	60.83	3.15	1.88	1.2	0.52	0.35	9.6	10.4	12.07

स्रोत - जिला सांख्यिकीय विभाग, हजारीबाग द्वारा उपलब्ध कराये गए भूमि उपयोग प्रतिरूप के आँकड़ों के आधार पर लेखक द्वारा गणन।

तालिका सं. 01  
चतरा जिला का प्रखण्डानुसार भूमि उपयोग प्रतिरूप (2004-05)  
(कुल भौगोलिक क्षेत्र का प्रतिशत)

क्र.	प्रखण्ड का नाम	वन क्षेत्र	गैर कृषि कार्य में लगाई भूमि	ऊसर और गैर कृषि योग्य भूमि	कृषि योग्य बंजर भूमि	चारागाह	विविध प्रकार के वृक्ष	परती भूमि		शुद्ध बोया गया क्षेत्र
								अन्य परती	चालु परती	
1	हंटरगंज	24342.5	3468.3	408.3	3172.5	222.6	234.4	3050.7	4147.7	12272.3
2	प्रतापपुर	23425.3	3656.3	3.3	2676.3	0.8	138.5	220.5	96	8361.2
3	कुन्दा	21406.1	1880	250.4	737.1	233.6	249.6	188.7	162.5	3399.8
4	लावालौंग	6427.8	1803.8	34.6	11740.6	276.5	317.2	2749.1	4943.1	11093.9
5	चतरा	25250.6	1953.4	636.2	1167.2	18.8	126.6	1938.7	929.3	8000.4
6	कान्हाचट्टी	13055.7	1005.6	1.9	516.3	23.8	0	1809.4	711.2	5624.3
7	इटखोरी	5048.9	1095.5	240.2	847.6	347.2	340.8	443.2	1049	6646.2
8	मयूरहंड	4021.3	1055.5	165.2	1751.8	89	128.4	219.6	317	5578.9
9	गिन्दौर	11241.5	1190.7	34	933	48	43.3	71	68	3789.4
10	पथलगाड़ा	8294.4	1107.8	0	416.5	0	0	0	0	3502.7
11	सिमरिया	13747	3812.3	1196.6	2178.8	181.4	932.4	457.6	1785.1	26956.6
12	टण्डवा	18755.6	2932.5	855.5	2929.1	627.1	435.4	1140.5	1100.6	15085.3
	चतरा जिला	175016.7	24961.8	3826.2	29066.8	2068.8	2946.8	12289	15309.5	110311

स्रोत - डिस्ट्रिक्ट सेन्सस हैड बुक चतरा, सिरिज-21, भाग XIA, सेन्सस ऑफ इण्डिया-2011

## 2) गैर कृषि कार्य में लगाई भूमि

इस प्रकार की भूमि के अन्तर्गत भवन, कारखाने, नदियाँ, सड़कें, रेलमार्ग, नहरें, डैम, तालाब आदि क्षेत्र शामिल किये जाते हैं।<sup>21</sup> खान एवं खनिज से संबंधित होने वाले कार्यों को भी इसी में शामिल किया जाता है। जैसे-जैसे जनसंख्या बढ़ती है वैसे-वैसे इस प्रकार की भूमि की माँग बढ़ती जाती है तथा अन्य उपयोग में लगे भूमि सांस्कृतिक भू-दृश्यों (Cultural Landscape) के अन्तर्गत आती जाती है। इसी के कारण गाँवों एवं शहरों का विकास जीवों की भाँति होते रहता है। विकास कार्य में तेजी से संभावना है कि इसमें निरंतर वृद्धि होती जायेगी।

जिला के 6.64 प्रतिशत (2011 ई०) भूमि गैर कृषि कार्य में संलग्न है जबकि 2004-05 में यह मात्र 3.15 प्रतिशत था। इस अवधि में गैर कृषि कार्य के अन्तर्गत टण्डवा प्रखण्ड में भूमि के प्रतिशत में ह्रास हुआ है। जहाँ 2004-05 में 10.10 प्रतिशत भूमि इसके अन्तर्गत थी वहीं 2011 ई० में घटकर 6.69 प्रतिशत रह गयी है। टण्डवा प्रखण्ड को छोड़कर सभी प्रखण्डों में इस प्रकार की भूमि के उपयोग में बढ़ोतरी हुई है।

## 3) ऊसर एवं गैर कृषि योग्य भूमि

इसके अन्तर्गत वैसी भूमि को सम्मिलित किया जाता है जो हर तरह से कृषि के अयोग्य है चाहे यह उच्चावच के कारण हो या मिट्टी की अनुर्वरता, अम्लीयता या अनुपलब्धता के कारण। जिला के पठारी भागों में वैसे चट्टानी क्षेत्र हैं जहाँ मिट्टी ही नहीं है। कुछ भागों पर अम्लीय लाल मिट्टी पाई जाती है, जबकि कुछ भाग पर मोरम (कंकड़ों से युक्त लाल मिट्टी) पाई जाती है, जो बिल्कुल अनुर्वर होती है। इस प्रकार की भूमि बेकार पड़ी होती है। इसका उपयोग भूमि नियोजन के बाद कृषि के अलावे मकान बनाने में हो सकता है। जिले के 1.02 प्रतिशत (2011 ई०) भाग पर इस प्रकार की भूमि पायी जाती है। 2004-05 ई० (1.88 प्रतिशत) के आंकड़ों को देखने से पता चलता है कि इस अवधि में ऐसी भूमि का अन्य उपयोग में लाया गया है। 2004-05 ई० एवं 2011 ई० (तालिका सं. 01 एवं 03) के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि जिले के सिमरिया प्रखण्ड के 0.68 प्रतिशत की तुलना में ऐसी भूमि का प्रतिशत बढ़कर 2.33 हो गया है। जिसका मुख्य कारण कृषि योग्य भूमि का ऊसर हो जाना है। शेष प्रखण्डों में ऐसी भूमि के प्रतिशत में कमी दर्ज की गई है।

## 04) कृषि योग्य बंजर भूमि

इसके अंतर्गत वह सभी प्रकार की भूमि सम्मिलित की जाती है जो कृषि योग्य होते हुए भी कई कारणों से बेकार पड़ी रहती है। मुख्य रूप से सिंचाई के सुविधाओं के अभाव के कारण इस प्रकार की भूमि बंजर बनी रहती है। इसका एक और कारण मृदा अपरदन है। अध्ययन क्षेत्र में चतरा जिला



इस प्रकार की भूमि अधिकांश 'टांड' (Upland) के रूप में पाई जाती है। 2011 ईस्वी में इस प्रकार की भूमि 7.73 प्रतिशत है जबकि 2004-05 ई० में ऐसी भूमि मात्र 1.20 प्रतिशत थी। इससे यह पता चलता है कि अध्ययन क्षेत्र में कृषि योग्य भूमि की बढ़ोतरी हो रही है। तालिका सं-01 एवं 03 के तुलनात्मक अध्ययन से जिला के प्रखंडों में इस प्रकार भूमि की अभूतपूर्व बढ़ोतरी देखने को मिलती है। सबसे ज्यादा वृद्धि लावालौंग प्रखंड में हुई है, जहाँ 2004-05 ई० में इस प्रखंड में मात्र 0.11 प्रतिशत इस प्रकार की भूमि थी वहीं 2011 ईस्वी में बढ़कर 29.81 प्रतिशत हो गई है।

### 5) चारागाह

चतरा जिला के मात्र 0.55 प्रतिशत (2011 ई०) चारागाह एवं अन्य गोचर भूमि पाई जाती है। 2004-05 ई० में भी मात्र 0.52 प्रतिशत भाग पर चारागाह थे। अध्ययन क्षेत्र में कृषि के साथ-साथ पशुपालन भी किया जाता है। पशुधन की वृद्धि के लिए स्थाई चारागाह एवं गोचर भूमि आवश्यक होता है। परंतु क्षेत्र में प्राकृतिक रूप से अधिकांश भूमि पर वनों का विस्तार है, जिससे चारागाह की समस्या हल हो जाती है। यही कारण है कि किसी-किसी प्रखंड में चारागाह वाली भूमि नगण्य है।

### 6) विविध प्रकार के पेड़ पौधों के अंतर्गत आने वाली भूमि

अध्ययन क्षेत्र में अनेक प्रकार के बाग बगीचे प्रायः सभी गाँवों में देखे जा सकते हैं। अतीत में बगीचा सांस्कृतिक कार्यक्रमों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है। उत्सव एवं मेले का स्थान बगीचा ही होता था। भूमि पर बढ़ते जन दबाव के कारण बाग-बगीचों के अंतर्गत आने वाली भूमि का उपयोग संतोषजनक नहीं है, फिर भी हाल के वर्षों में सरकार द्वारा किए गए प्रयासों के फलस्वरूप लोगों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता आई है। यही कारण है कि जिला में जहाँ 2004-05 ई० में इस प्रकार की भूमि मात्र 0.35 प्रतिशत थी वहीं 2011 ई० में बढ़कर 0.78 प्रतिशत हो गई है। तालिका सं.- 01 एवं 03 का अध्ययन करें तो पाते हैं कि कान्हाचट्टी एवं पत्थलगड़ा प्रखंडों को छोड़कर शेष सभी प्रखंडों में इस प्रकार के भूमि उपयोग में वृद्धि हुई है।

### 7) परती भूमि

यह उपजाऊ और कृषि योग्य भूमि है किंतु किसी कारणवश परती रह जाती है। इसका कारण कभी-कभी सिंचाई की कमी होती है तो कभी-कभी किसानों की गरीबी होती है। जिसके कारण किसान खेतों में बीज डालने से असमर्थ रहता है। यह दो प्रकार का होता है- चालू परती तथा अन्य परती।<sup>22</sup>

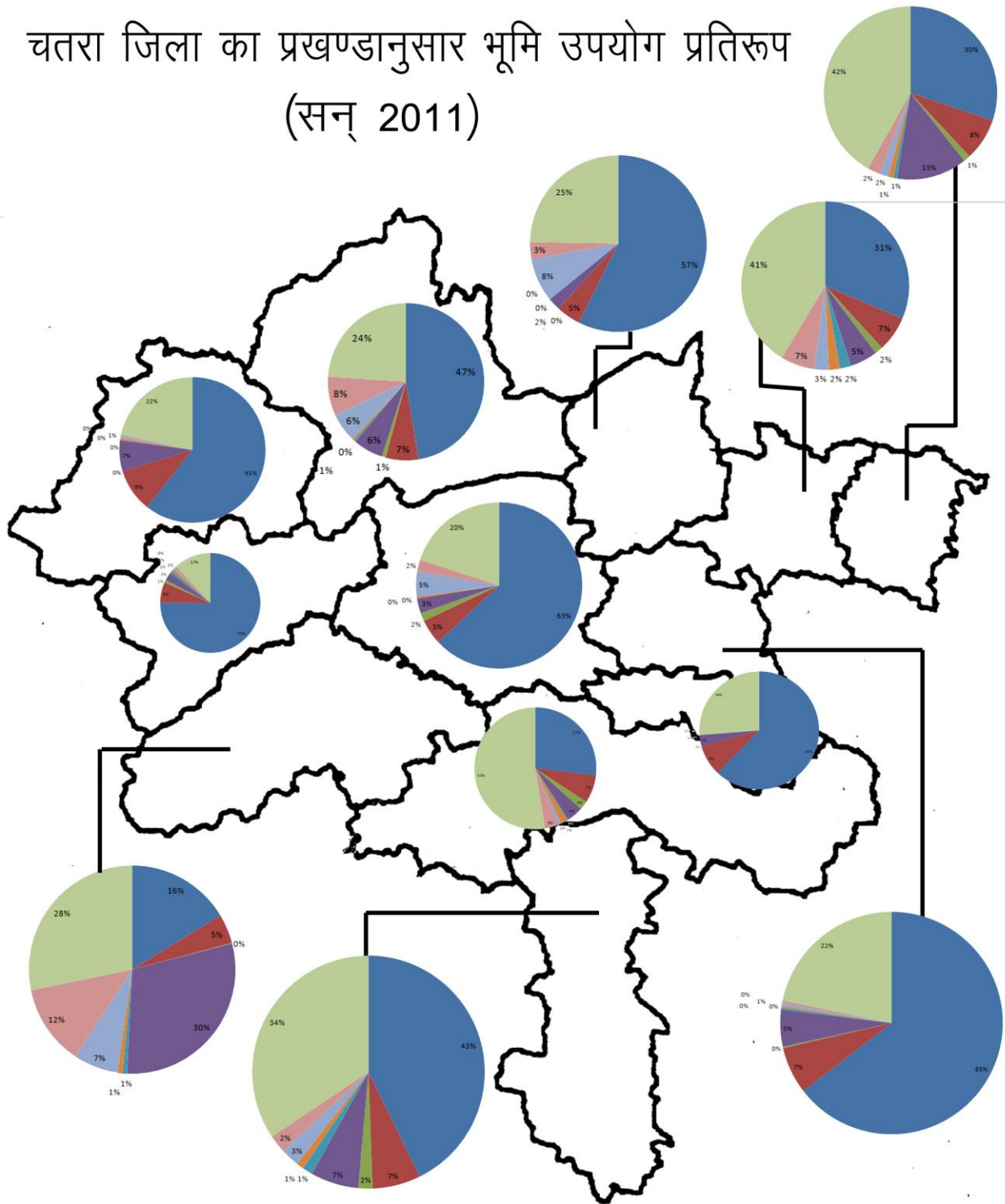
तालिका सं. 03

**चतरा जिला का प्रखण्डानुसार भूमि उपयोग प्रतिरूप (2011 ई०)**  
(कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का प्रतिशत)

क्र.	प्रखण्ड का नाम	वन क्षेत्र	गैर कृषि कार्य में लगाई भूमि	ऊसर और गैर कृषि योग्य भूमि	कृषि योग्य बंजर भूमि	चारागाह	विविध प्रकार के वृक्ष	परती भूमि		शुद्ध बोया गया क्षेत्र
								अन्य परती	चालु परती	
1	हंटरगंज	47.43	6.75	0.79	6.18	0.43	0.45	5.94	8.08	23.92
2	प्रतापपुर	60.72	9.48	0.008	6.94	0.002	0.36	0.57	0.25	21.67
3	कुन्दा	75.09	6.59	0.88	2.6	0.83	0.85	0.66	0.57	11.93
4	लावालौंग	16.32	4.58	0.08	29.81	0.7	0.8	6.98	12.55	28.18
5	चतरा	63.09	4.88	1.59	2.92	0.05	0.32	4.84	2.32	19.99
6	कान्हाचट्टी	57.39	4.42	0.008	2.27	0.11	0	7.95	3.13	24.72
7	इटखोरी	31.43	6.82	1.5	5.28	2.16	2.12	2.76	6.53	41.4
8	मयूरहंड	30.17	7.92	1.24	13.14	0.67	0.96	1.65	2.38	41.87
9	गिद्धौर	64.54	6.84	0.19	5.36	0.28	0.25	0.41	0.39	21.75
10	पत्थलगड़ा	62.27	8.32	0	3.13	0	0	0	0	26.29
11	सिमरिया	26.82	7.44	2.33	4.25	0.35	1.82	0.89	3.48	52.62
12	टण्डवा	42.76	6.69	1.95	6.68	1.43	1	2.6	2.5	34.39
	चतरा जिला	46.57	6.64	1.02	7.73	0.55	0.78	3.27	4.08	29.36

स्रोत – तालिका संख्या 02 के आधार पर लेखक द्वारा परिगणन।

## चतरा जिला का प्रखण्डानुसार भूमि उपयोग प्रतिरूप (सन् 2011)



- |  |  |  |
|--|--|--|
| <ul style="list-style-type: none"> <li><span style="color: blue;">■</span> वन क्षेत्र</li> <li><span style="color: purple;">■</span> कृषि योग्य बंजर भूमि</li> <li><span style="color: lightblue;">■</span> अन्य परती</li> </ul> | <ul style="list-style-type: none"> <li><span style="color: red;">■</span> गैर कृषि कार्य में लगाई भूमि</li> <li><span style="color: teal;">■</span> चारागाह</li> <li><span style="color: brown;">■</span> चालु परती</li> </ul> | <ul style="list-style-type: none"> <li><span style="color: green;">■</span> ऊसर और गैर कृषि योग्य भूमि</li> <li><span style="color: orange;">■</span> विविध प्रकार के वृक्ष</li> <li><span style="color: lightgreen;">■</span> शुद्ध बोया गया क्षेत्र</li> </ul> |
|--|--|--|

**चालू परती** — इसके अंतर्गत वैसी भूमि को शामिल किया जाता है जो चालू वर्ष (1 वर्ष तक) में कृषि कार्य में उपयोग में नहीं लाई जाती है। चालू परती भूमि प्रत्येक वर्ष भिन्न-भिन्न होता है। अगर किसान वर्षा की कमी, बीजों का अभाव, श्रमिकों की कमी या फिर सिंचाई के अभाव के कारण चालू वर्ष में प्रयोग में नहीं ला पाता है तो वैसी भूमि को इसमें शामिल किया जाता है। परंतु अगर सहयोगी परिस्थितियां मिल जाती है तो कृषि कार्य में शामिल कर लिया जाता है।

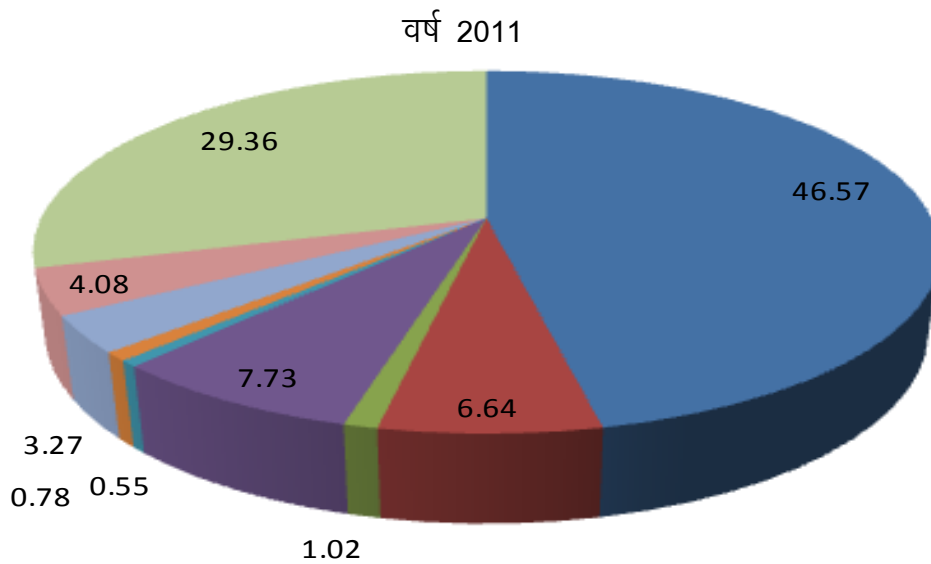
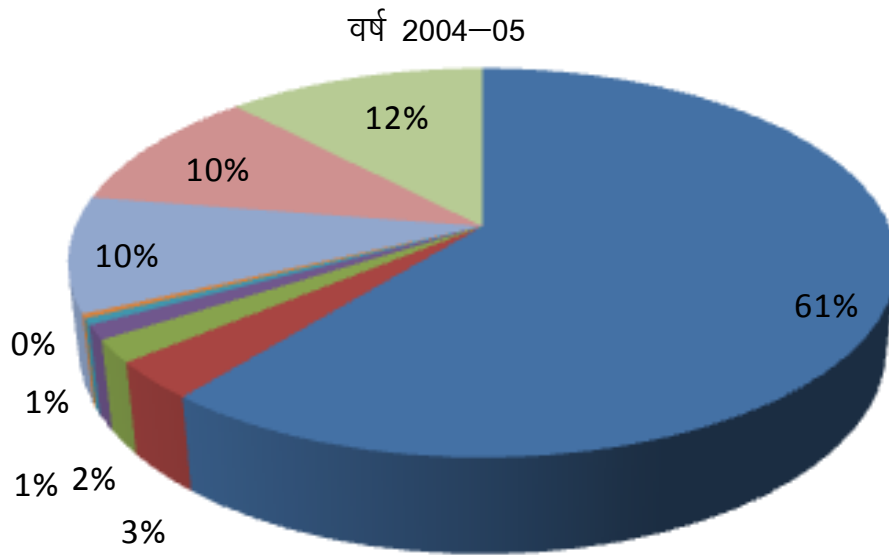
अध्ययन क्षेत्र में जहाँ 2004-05 ई० में इस प्रकार की भूमि का प्रतिशत 10.40 था वहीं 2011 ई० में घटकर मात्र 4.08 प्रतिशत हो गया है। इससे यह पता चलता है कि जिला में कृषिजन्य सुविधाओं में सुधार हुआ है। तालिका सं-01 एवं 03 का तुलनात्मक अध्ययन करें तो इस अवधि में लावालौन्ग प्रखंड (12.55 प्रतिशत 2011 ई०) को छोड़कर सभी प्रखंडों में इस प्रकार की भूमि उपयोग में कमी देखने को मिलती है। 2004-05 ई० (0.39 प्रतिशत) की तुलना में लावालौंग प्रखंड में काफी वृद्धि हुई है।

**अन्य परती** — इस प्रकार की भूमि कम से कम 2 वर्ष तथा अधिक से अधिक 5 वर्ष तक परती रहती है। उपयुक्त मौसम आने पर ऐसी भूमि का प्रयोग कृषि कार्य के लिए किया जाता है। जिला में अन्य परती भूमि 9.60 प्रतिशत (2004-05 ई०) की तुलना में मात्र 3.29 प्रतिशत (2011 ई०) कम हुई है। प्रखंडों में 2004-05 ई० की तुलना में 2011 ई० में अन्य परती भूमि लावालौन्ग को छोड़कर कम हुई है। लावालौन्ग प्रखंड में 2004-05 में मात्र 0.49 प्रतिशत अन्य परती भूमि थी जो 2011 ई० में बढ़कर 6.98 प्रतिशत हो गई है।

### **8) शुद्ध बोया गया क्षेत्र :-**

शुद्ध बोया गया क्षेत्र किसी विशेष वर्ष में कृषि में प्रयुक्त हुए कुल भूमि को प्रदर्शित करता है।<sup>23</sup> इस प्रकार की भूमि में प्रतिवर्ष घट-बढ़ होते रहता है। जिस वर्ष कृषि के अनुकूल मौसम होता है उस वर्ष ज्यादा भूमि पर फसलों को उगाया जाता है। अध्ययन क्षेत्र में प्रखंडानुसार इस प्रकार की भूमि में भिन्नता देखी जाती है। जिसका मुख्य कारण वहाँ पाई जाने वाली मिट्टी का प्रकार, वनों का विस्तार, जनसंख्या का वितरण, उच्चावच आदि है। 2011 ई० में 29.36 प्रतिशत भाग पर चतरा जिला में बुआई की गई थी जो 2004-05 ई० के 12.07 प्रतिशत भाग का दुगुने से अधिक है। इस अवधि में जिले में कृषि कार्य में काफी अच्छा सुधार हुआ है। तालिका सं. 01 एवं 03 का तुलनात्मक अध्ययन करें तो यह स्पष्ट होता है कि प्रखंडों में 2004-05 ई० के अपेक्षा 2011 ई० में दुगुने-तीगुने से लेकर पाँचगुने तक शुद्ध बोए गए क्षेत्रों में वृद्धि हुई है। ऐसे क्षेत्रों की सबसे ज्यादा वृद्धि लावालौंग प्रखंड में हुई है, जहाँ 0.72 प्रतिशत (2004-05 ई०) से बढ़कर 28.18 प्रतिशत (2011 ई०) में हो गई है। इन प्रतिरूपों के अध्ययन

### भूमि उपयोग प्रतिरूप



- 1 वन क्षेत्र
- 2 गैर कृषि कार्य में लगाई भूमि
- 3 ऊसर और गैर कृषि योग्य भूमि
- 4 कृषि योग्य बंजर भूमि
- 5 चारागाह
- 6 विविध प्रकार के वृक्ष
- 7 अन्य परती
- 8 चालु परती
- 9 शुद्ध बोया गया क्षेत्र

करने से यह बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है कि अध्ययन क्षेत्र में कृषि सुविधाओं जैसे उत्तम बीज, उर्वरक, सिंचाई, कृषि यंत्र आदि की सुविधाओं में बढ़ोतरी हुई है। इसके पीछे कृषि वैज्ञानिकों (कृषि अभिकरण, चतरा), सहकारी बैंकों, किसान क्रेडिट कार्ड योजना, सरकारी बीजों की उपलब्धता एवं लघु एवं मध्यम सिंचाई योजनाओं की उपलब्धता आदि का बहुत बड़ा योगदान है।

तालिका सं. 04  
सम्पूर्ण जिला का भूमि उपयोग प्रतिरूप में परिवर्तन  
(2004-05 एवं 2011)

क्र.	भूमि उपयोग प्रतिरूप	2004-05		2011	
		हेक्टेयर	कुल भौगोलिक क्षेत्र का प्रतिशत	हेक्टेयर	कुल भौगोलिक क्षेत्र का प्रतिशत
1	वन क्षेत्र	225751.21	60.83	175016.7	46.57
2	गैर कृषि कार्य में लगाई भूमि	11661.53	3.15	24961.8	6.64
3	ऊसर और गैर कृषि योग्य भूमि	6995.27	1.88	3826.2	1.02
4	कृषि योग्य बंजर भूमि	4452.91	1.2	29066.8	7.73
5	चारागाह	1933.11	0.52	2068.8	0.55
6	विविध प्रकार के वृक्ष	1300.44	0.35	2946.8	0.78
7	अन्य परती	35655.61	9.6	12289	3.27
8	चालु परती	38590.8	10.4	15309.5	4.08
9	शुद्ध बोया गया क्षेत्र	44791.89	12.07	110311	29.36
	कुल	371132.95	100	375798	100

स्रोत – भूमि उपयोग प्रतिरूप जिला सांख्यिकीय विभाग, हजारीबाग द्वारा 2004-05 ई० एवं डिस्ट्रिक्ट सेन्सस हैंडबुक चतरा, 2011 भाग XIIA के आंकड़ों के आधार पर गणन।

#### निष्कर्ष :-

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि जिला में निम्नांकित वर्षों में भूमि उपयोग प्रतिरूप में परिवर्तन हुआ है। अर्थात् भूमि उपयोग प्रतिरूप गत्यात्मक है। इससे सहज ही

अनुमान लगाया जा सकता है कि प्रकृतिक भू-दृश्य सांस्कृतिक भू-दृश्यों में परिवर्तित हो रहे हैं। इसका सबसे बड़ा परिणाम विगत 06-07 वर्षों में लगभग 20 प्रतिशत वनों का ह्रास है। हॉलांकि जिला में शुद्ध बोए गए क्षेत्रों में वृद्धि हुई है जो प्राकृतिक संसाधन भूमि पर मानवीय हस्तक्षेप प्रदर्शित करता है। इसी प्रकार क्षेत्रिय भूमि उपयोग में भी विषमता देखने को मिलती है और सभी प्रखंडों में परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है।

### संदर्भ सूची :-

- 1) तिवारी, आर.सी.- अधिवास भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद, पृ.-217
- 2) बेनेजटी, सी.,- लैंड यूज एण्ड नेचुरल वेजीटेशन इन इंटरनेशनल ज्योग्राफी, एडिटेड बाई, डब्ल्यू०, पीटर, एडम्स एंड फेडरिक, एम., हेलीनर टोरंटो यूनिवर्सिटी, प्रेस, 1972, पृ.105-106
- 3) बुड, एस.जी.- ऑन द ओरिजन ऑफ हिमालया मॉउन्टेन्स, ज्योलोजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, प्रोफेसनल पेपर, सं.-12, कलकत्ता, पृ.-11
- 4) सावर, सी.ओ.- मैपिंग द यूटिलाइजेशन ऑफ लंदन, ज्योग्राफिकल रिव्यू, 1919, पृ.-4
- 5) जोन्स एंड फ्रिन्च - डिटेल्स फिल्ड मैपिंग ऑफ एन एग्रीकल्चरल एरिया एनिमल्स ऐज सोसल अमेरिकन ज्योग्राफरस, 1925, पृ.-15
- 6) स्टाम्प, एल.डी. - द लैंड यूटिलाइजेशन सर्वे ऑफ ब्रिटेन, ज्योग्राफिकल जर्नल, 78, 1931, पृ.40-53
- 7) शफी, एम.- लैंड यूटिलाइजेशन ऑफ इस्टर्न यू.पी., अलीगढ़ यूनिवर्सिटी, अलीगढ़, 1960
- 8) भाटिया, एस.एस.- पैटर्न ऑफ क्रॉप कबिनेशन एंड डाइवर्सिफिकेशन इन इण्डिया, इकोनोमिक ज्योग्राफी 4, 1965
- 9) राव, एल.एस. प्रकाश - सोआइल सर्वे एंड लैंड यूज एनालिसिस, इण्डियन ज्योग्राफिकल रिव्यू, 1947, कलकत्ता
- 10) अली, एस.एन. - लैंड यूटिलाइजेशन सर्वे ऑफ इण्डिया, द ज्योग्राफर, पृ.-15
- 11) सिन्हा, बी.एन. - एग्रीकल्चर इफिशियंसी इन इंडिया, द ज्योग्राफी VOL-XI, नवम्बर, स्पेशल XXI, इंटरनेशनल ज्योग्राफीकल कॉन्फ्रेंस, 1969
- 12) गौरी शंकर - भूमि उपयोग मूल्यांकन एवं मानचित्रण राष्ट्रीय एटलस एवं थियैटिक मानचित्र संगठन, कलकत्ता, 1988, पृ.-19
- 13) आलम, मो. इफतेखार, चतरा की खोज, पुनम ऑफसेट, चतरा, 2002, पृ.-01
- 14) दैनिक हिन्दुस्तान 7वाँ स्थापना दिवस विशेषांक, रांची संस्करण, 16 फरवरी 2006, खंड एक, पृ.-06
- 15) तिवारी, रामकुमार- झारखण्ड का भूगोल, राजेश पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2001, पृ.-28
- 16) मितल, के.एन.- आजादी के दीवानों की ऐतिहासिक नगरी चतरा (लेख), हिन्दुस्तान रांची, स्थापना दिवस परिशिष्ट, 15 नवम्बर 2006, पृ.-4
- 17) तिवारी, रामकुमार- झारखण्ड का भूगोल, रोजश पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2001, पृ. 96
- 18) राव एवं सिंह- बिहार का भौगोलिक स्वरूप, वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर, 2001, पृ.-111
- 19) कुमार, श्याम- झारखण्ड एक विस्तृत अध्ययन, स्पर्धा प्रकाशन, रांची, 2005, पृ.-359
- 20) राव एवं सिंह- बिहार का भौगोलिक स्वरूप, वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर, 2001, पृ.-179
- 21) तिवारी, रामकुमार- झारखण्ड का भूगोल, रोजश पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2001, पृ. 80
- 22) वही, पृ.-85
- 23) सिंह, सुभाष कुमार- ज्योग्राफिकल एनालिसिस ऑफ द पोपुलेशन ऑफ वेस्ट सिंहभूम डिस्ट्रिक्ट, अप्रकाशित शोध प्रबंध, मगध विश्वविद्यालय बोधगया, 1997, पृ.-14